Degree 1st Pol.Sc Paper 1st

प्रश्न :— समाजशास्त्र, इतिहास के साथ राजनीतिशास्त्र के संबंध की विवेचना करें।

Question :- (Discuss the relation of Pol. Sc with Sociology and History.)

मनुष्य का जीवन सामाजिक है। सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलू है। इन विभिन्न पहलुओं का अध्ययन विभिन्न समाजशास्त्रों (Social Sciences) द्वारा किया जाता है, जैसे - राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र, इतिहास, मनोविज्ञान आदि। ये सभी सामाजिक शास्त्र मानव के सामाजिक जीवन के किसी न किसी पहलू से संबंधित है अतः इनका आपस में घनिष्ठ संबंध है। हम कह सकते हैं सामाजिक शास्त्र एक वृक्ष के विभिन्न शाखाओं के समान है। जिनकी जड़ एक ही है।

राजनीतिशास्त्र भी एक सामाजिक शास्त्र है जो मनुष्य के राजनीतिक पहलू का अध्ययन करता है। अतः अन्य सामाजिक शास्त्रों से उसके संबंध का ज्ञान आवश्यक है। 'Garner' (गार्नर) ने इस संबंध में कहा है कि "हम दूसरे विज्ञानों का ज्ञान प्राप्त किए बिना राजविज्ञान एवं राज्य का पूर्ण ज्ञान ठीक उसी प्रकार प्राप्त नहीं कर सकते जिस प्रकार गणित के बिना भौतिकविज्ञान और रसायनशास्त्र के बिना जीवविज्ञान का ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता है।

राजनीतिशास्त्र का अन्य सामाजिक शास्त्रों से संबंध आवश्यक ही नहीं लाभदायक भी है। "सिजविक (Sidgwick) ने कहा है कि यदि हम किसी विषय या विज्ञान का अन्वेषण करना है तो यह अत्यन्त लाभदायक होगा कि हम उस विज्ञान या विषय का अन्य विज्ञानों एवं विषयों से संबंध मालूम करें, फिर यह ज्ञात करें कि उक्त विषय ने अन्य विषयों से क्या लिया है और उसने स्वयं अन्य विषयों को क्या दिया।"

Scanned with CamScanner

राजनीतिशास्त्र और समाजशास्त्र (Political sc and Sociology)

राजनीतिशास्त्र एवं समाजशास्त्र एक दूसरे के पूरक है। समाजशास्त्र में मानव-जीवन के पहलुओं का अध्ययन किया जाता है। जिसमें राजनीतिक पहलू भी एक है। राजनीतिक पक्ष के बारे में समाजशास्त्र राजनीतिशास्त्र को तथ्य प्रदान करता है। समाजशास्त्र ~~समाज~~ राजनीतिशास्त्र को राज्य की मूलभूत बातों तथा उनकी सामाजिक आधारशिला का ज्ञान प्रदान करता है। समाजशास्त्र हमें राजनीतिसत्ता, सम्प्रभुता एवं राजनीतिक संस्कृति का मूलस्त्रोत बताता है। अतः समाजशास्त्र के ज्ञान के बिना राजनीतिशास्त्र का अध्ययन नहीं किया जा सकता इसके अध्ययन के बिना राजनीतिशास्त्र का ज्ञान अधूरा है। इस संबंध में "गार्नर" ने कहा है कि "एक राजनीतिक वैज्ञानिक को समाजशास्त्री होना चाहिए और एक समाजशास्त्री को राजनीतिक वैज्ञानिक"।

इतना निकट सम्बन्ध होने के बावजूद दोनों शास्त्रों में अंतर है।

(क) विस्तार के दृष्टिकोण से :— समाजशास्त्र का क्षेत्र राजनीतिशास्त्र के क्षेत्र की अपेक्षा अधिक व्यापक है। समाजशास्त्र समाज के सभी पहलुओं का अध्ययन करता है। इसके विपरीत राजनीतिशास्त्र केवल संबंध तथा राजनीतिक समुदायों का अध्ययन करता है। समाजशास्त्र में मनुष्य का एक सामाजिक प्राणी के रूप में अध्ययन होता है। और राजनीतिक संगठन एक विशेष प्रकार का राजनीतिक संगठन है अतः राजनीतिशास्त्र समाजशास्त्र की अपेक्षा अधिक विशिष्ट शास्त्र है।

Scanned with CamScanner

(ख) प्राचीनता के दृष्टिकोण से :— राजनीतिशास्त्र का प्रारम्भ मनुष्य को राजनीतिक प्राणी मानकर होता है। लेकिन समाजशास्त्र हमें यह बतलाता है कि मनुष्य मनुष्य कैसे और क्यों राजनीतिक प्राणी बन गया। अतः समाजशास्त्र राजनीतिशास्त्र से अधिक प्राचीन है।

(ग) विधि के दृष्टिकोण से :— राजनीतिशास्त्र केवल राज्य-निर्मित विधियों और नियमों का अध्ययन करता है जबकि समाजशास्त्र विधियों के अतिरिक्त धार्मिक प्रथाओं, सामाजिक आचारों तथा परम्पराओं का भी।

(घ) उद्देश्य के दृष्टिकोण से :— समाजशास्त्र राजनीतिशास्त्र की अपेक्षा बहुत कम दार्शनिक है। क्योंकि समाजशास्त्र का सम्बन्ध ठोस तथ्यों से रहता है पर राजनीतिशास्त्र का संबंध आदर्शों से रहता है। राजनीतिशास्त्र यह बतलाता है कि राज्य कैसा होना चाहिए।

(ङ) विवेचना पद्धति के दृष्टिकोण से :— समाजशास्त्र वर्णनात्मक विज्ञान है जो विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के अतीत का अध्ययन करता है, परन्तु राजनीतिशास्त्र एक आदर्शपरक विज्ञान है। यह राज्य के अतीत तथा वर्तमान के अलावा उसके आदर्श ध्येय तथा भावी स्वरूप की छानबीन करता है।

(च) मानव-रूप के दृष्टिकोण से :— समाजशास्त्र मनुष्य का अध्ययन समाज में पाये जाने वाले सभी संभावित रूपों में करता है, नागरिक समाजसेवक, आर्थिकप्राणि आदि के रूप में जबकि राजनीतिशास्त्र मनुष्य का अध्ययन केवल नागरिक के रूप में करता है।

राजनीतिशास्त्र और इतिहास (Political. Sc and History)

इतिहास मानव समुदाय की कहानी है यह मानव सभ्यता के विकास का विवरण प्रस्तुत करता है।

Scanned with CamScanner

गैटेल ने लिखा है "इतिहास अतीत की घटनाओं और क्रियाओं, उनके कारणों तथा पारस्परिक संबंधों का लेखा है। यह आर्थिक, धार्मिक, बौद्धिक और सामाजिक दशाओं के साथ-साथ राज्य उनके विकास संगठन तथा पारस्परिक संबंध का भी वर्णन करता है।

राजनीतिशास्त्र इतिहास एक दूसरे के पूरक हैं। एक के अभाव में दूसरे का अध्ययन किया निरर्थक है। दोनों विषयों की पारस्परिक निर्भरता इतनी अधिक है कि " सीले के शब्दों में जो राजनीति इतिहास द्वारा उदार नहीं बनाई गई वह अधम है, इतिहास का राजनीति से संबंध जब टूट जाता है तो वह साहित्य बन कर व्यर्थ हो जाता है।"

दोनों शास्त्रों की सर्वाधिक स्पष्ट विवरण "सीले" (Seeley) के शब्दों में मिलता है, " राजनीतिशास्त्र के बिना इतिहास एक ऐसे वृक्ष के समान है जिसमें कोई फल नहीं लगता है और इतिहास के बिना राजनीतिशास्त्र जड़रहित एक वृक्ष के समान है।

राजनीतिशास्त्र इतिहास का अनेक रूपों में ऋणी है।

पहला, इतिहास राजनीतिशास्त्र को घटनाओं एवं विभिन्न सामग्रियों को प्रस्तुत करता है, अर्थात् राज्य राजनीतिक इतिहास की उपज है,

दूसरा, इतिहास राजनीतिशास्त्र के भावी आदर्शों एवं सिद्धान्तों को निर्धारित करता है। राजनीतिशास्त्र के सिद्धान्तों को केवल दार्शनिक तथा काल्पनिक आधार पर निश्चित नहीं किया जा सकता है। उन्हें तभी मान्यता दी जानी चाहिए जब वे वास्तविकता के कसौटी पर खरा उतरें। इस प्रकार हम इतिहास के आधार पर ही भावी आदर्शों को निश्चित कर सकते हैं।

तीसरा, इतिहास राजनीतिशास्त्र का शिक्षक है। इतिहास मनुष्य की सफलताओं एवं विफलताओं का संग्रह है। अतीत में मानव जाति ने क्या भूल की,

किस नीति को अपनाने का क्या परिणाम हुआ आदि बातों की जानकारी हमें इतिहास से होती है। भारतीय इतिहास में अकबर की सफलता एवं औरंगजेब की विफलता राजनीतिज्ञों को शिक्षा देती है। इतिहास हमें बताता है कि राजनीतिज्ञ क्या नहीं कर पाते हैं। इतिहास निरंकुश राजा अधिकारियों तक के आधार पर राजनीतिज्ञ भविष्य द्वारा बताई गई भूलों के आधार पर में सतर्क रहते हैं।

चौथा इतिहास राजनीतिशास्त्र के विचार-क्षितिज को विस्तृत बनाता है। इतिहास भूत, वर्तमान तथा भविष्य तीनों के बीच एक पुल स्थापित करता है। जीवन की भावनाओं के प्रति एक विशेष भाव उत्पन्न करता है, जिसे हम "ऐतिहासिक चेतना" कहते हैं।

पंचम, कोई भी राजनीतिक संस्था अकस्मात पैदा नहीं होती है। उसका वर्तमान धीरे-धीरे होने वाले क्रमिक विकास का फल है। किसी समय में किसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए एक संस्था का जन्म होता है। धीरे-धीरे समय के अनुसार इसमें परिवर्तन होता है। सामाजिक इतिहास के सभी नए विचार पुराने विचारों के संशोधित रूप हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इतिहास हमारा सर्वोच्च गुरु है। यह राजनीतिशास्त्र को सामग्री प्रदान करता है, आदर्शों तथा सिद्धान्तों के निर्धारण में सहायता पहुँचाता है तथा भूलों को सुधारता है।

दूसरी ओर इतिहास राजनीतिशास्त्र का ऋणी है। राजनीतिशास्त्र इतिहास को विचारमय तथा गंभीर बनाता है। इस संबंध में "लॉर्ड ब्राइस" (Lord Bryce) ने कहा है कि "राजनीति विज्ञान इतिहास और राजनीति के बीच की कड़ी है। और यह अतीत को वर्तमान से जोड़ता है। यह इतिहास से अपनी सामग्री प्राप्त करता है और राजनीति में इस सामग्री का प्रयोग करता है।"

राजनीतिशास्त्र और इतिहास में अंतर

इतिहास और राजनीति शास्त्र में निकट का संबंध है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि दोनो विषय एक हैं। इतिहास भूतकाल की राजनीति है और राजनीति वर्तमान इतिहास है। तो दोनो विषयों में प्रर्याप्त स्पष्ट/पृथक भाव तथा मौलिक भेद है जो निम्नलिखित है।

(क) क्षेत्र की दृष्टि से :— इतिहास का क्षेत्र विस्तृत और व्यापक है। इसके अन्तर्गत युद्ध, क्रांतियों आर्थिक परिवर्तनों, धार्मिक एवं सामाजिक आंदोलनों आदि का अध्ययन किया जाता है। लेकिन राजनीतिशास्त्र का सम्बन्ध राज्य या अन्य राजनीतिक संस्थाओं तथा उन पर पड़ने वाले प्रभाव डालने वाले तथ्यों से है। उदाहरण स्वरूप भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम का अध्ययन करते समय हम घटनाओं पर विशेष ध्यान नहीं देते, बल्कि उस काल के राजनीतिक एवं संवैधानिक विकासों पर विशेष ध्यान देते हैं। इसी प्रकार, इंग्लैण्ड के इतिहास से संबंधित घटनाओं का राजनीतिशास्त्र से उतना संबंध नहीं है, जितना वहाँ के राजतंत्र तथा उदारवादी शासन के उद्भव तथा विकास से है।

(ख) उद्देश्य के दृष्टिकोण से :— दोनों शास्त्रों के उद्देश्य भी भिन्न हैं। इतिहास घटनाओं का वर्णन करता है, जबकि राजनीतिशास्त्र काल्पनिक तथा नैतिक है। यह केवल यह अध्ययन नहीं करता कि राज्य क्या है अपितु यह भी बताता है कि राज्य को क्या होना चाहिए। राजनीतिशास्त्र एक आदर्शात्मक शास्त्र है जबकि इतिहास वर्णनात्मक।

(ग) अध्ययन विधि के दृष्टिकोण से :— राजनीतिशास्त्र विचारात्मक तथा पर्यवेक्षणात्मक विधियों का अध्ययन करता है, जबकि इतिहास घटनाओं का क्रमबद्ध अध्ययन (विवरण) प्रस्तुत करता है।

Scanned with CamScanner

अन्त में निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि इतिहास और राजनीति शास्त्र में घनिष्ट सम्बन्ध है। ये पारस्परिक रूप से इतने जुड़े हैं कि इनके क्षेत्र कहीं एक दूसरे को छूते हैं और कहीं एक-दूसरे का अतिक्रमण करते हैं। फिर भी दोनों विषय पृथक-पृथक हैं। दोनों के विषय क्षेत्र दोनों की पद्धतियों तथा उद्देश्य में प्रमुख अन्तर है।

Scanned with CamScanner